# सफलता और मुक्ति
# का
# एक ही रास्ता

मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ
डॉ॰ मुहम्मद रज़ी-उल-इस्लाम नदवी
मुहम्मद इक़बाल मुल्ला

अनुवाद

मुहम्मद इलियास हुसैन

# विषय-सूची

**1. विभिन्न धर्मों में मुक्ति की धारणा** : मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ 5

भारतीय विचारधाराएँ 5

ईसाई धर्म में मुक्ति की धारणा 8

यहूदी धर्म में मुक्ति की धारणा 9

इस्लाम में मुक्ति की धारणा 9

**2. वास्तविक सफलता और मुक्ति—इस्लाम की नज़र में :**

डॉ॰ रज़ी-उल-इस्लाम नदवी 13

सफलता-प्राप्ति : हर व्यक्ति की स्वाभाविक इच्छा 13

सफलता के अलग-अलग पैमाने 13

शाश्वत सफलता की इच्छा स्वाभाविक है 14

ज़िन्दगी की इस्लामी अवधारणा 15

परलोक की सफलता ही सच्ची सफलता है 16

दुनिया ही को सब कुछ समझनेवाले असफल और घाटे में हैं 18

सफल वास्तव में कौन लोग हैं? 19

वास्तविक मोक्ष परलोक में नरक से मुक्ति है 22

**2. सफलता और मुक्ति की वास्तविक धारणा** : मुहम्मद इक़बाल मुल्ला 24

एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न 24

धर्म समस्त मनुष्यों के लिए अनिवार्य है 27

धर्मों में सफलता और मुक्ति की धारणा 31

हिन्दू धर्म 32

बौद्ध मत 34
जैन मत 35
ईसाई मत 36
यहूदी मत 37
इस्लाम 38
मानव-जीवन और सम्पूर्ण जगत् के सम्बन्ध में
क़ुरआन की धारणा 38
क़ुरआन का स्पष्टीकरण 41

✧✧

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

'शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहमवाला है।'

# विभिन्न धर्मों में मुक्ति की धारणा

✍ मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ

मुक्ति की धारणा सभी धर्मों में पाई जाती है। प्रत्येक धर्म में मुक्ति को महत्त्व दिया गया है। इसका कारण यह है कि वर्तमान जीवन से क़ोई सन्तुष्ट नहीं है। इस जीवन में लोगों को अभाव की अनुभूति होती रहती है। बड़ी प्यास महसूस होती है। कहीं दुख है, तो कहीं महरूमी (निराशा)। यदि ये चीज़ें न भी हों, तो हर समय मौत का ख़तरा तो बना ही रहता है। मनुष्य एक ऐसे जीवन का सपना देखता है, जिसमें कोई दुख और भय न हो; बल्कि पूरा जीवन प्रसन्नता, प्रफुल्लता और आनन्द से परिपूर्ण हो। इसलिए मुक्ति को हर धर्म ने लक्ष्य ठहराया है। कहीं इसको 'मुक्ति' का नाम दिया गया है और कहीं 'मोक्ष' का। मुक्ति की धारणा का गहरा सम्बन्ध मनुष्य के जीवन से है। इसके अतिरिक्त जीवन और आत्मा के प्रति उसकी धारणा से भी मुक्ति का सम्बन्ध पाया जाता है।

## भारतीय विचारधाराएँ

जब हम धर्मों और विभिन्न धारणाओं का अध्ययन करते हैं तो ज्ञात होता है कि भारत में 'चार्वाक' किसी आत्मा को नहीं मानते हैं। उनकी दृष्टि में इन्द्रियाँ ही सब कुछ हैं, अलग से कोई आत्मा नहीं है। उनका कहना है कि शरीर के साथ वह और उसकी चेतना भी नष्ट हो जाती है।

बौद्ध मत में आत्मा को कोई स्थायी महत्त्व और स्थान नहीं दिया गया है; बल्कि इसे 'स्टीम ऑफ़ कांशंस' कहा गया है। आत्मा का अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। वे परमात्मा को भी नहीं मानते हैं।

जैन मत में आत्मा को स्वीकार किया गया है और आत्मा को स्थायी रूप दिया गया है और कहा गया है कि आत्मा के भीतर निरन्तर चेतना बनी रहती है। आत्मा अनन्त ज्ञान का भण्डार है। इसके भीतर वीरता है और आनन्द भी।

उपनिषद् के अन्दर आत्मा के बारे में जो बात कही गई है वह यह है कि मनुष्य के भीतर शाश्वतता पाई जाती है। आत्मा एक प्रकाश है जो प्रत्येक मनुष्य के भीतर समाया हुआ है। वह प्रकाश का प्रकाश है, जो प्रकाश से भी परे है।

शंकराचार्य, जिन्हें भारतीय वाङ्मय में बहुत महत्ता प्राप्त है और जिन्होंने उपनिषद् आदि पर अनेकानेक टीकाएँ लिखी हैं, के विचार में आत्मा सत्य का आनन्द है। इसके भीतर सत्य भी है, आनन्द भी है और चेतना भी।

चार्वाक की दृष्टि में मुक्ति का कोई प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। वे आत्मा के किसी स्वतंत्र रूप को स्वीकार नहीं करते। उनकी दृष्टि में शरीर ही सब कुछ है। उपनिषद् का कथन है कि आत्मज्ञान यदि किसी को प्राप्त हो जाए तो उसे मुक्ति या मोक्ष की प्राप्ति हो जाएगी। मुक्ति आत्मज्ञान पर निर्भर है, धारणा और कर्म पर नहीं। गीता में जो बात कही गई है वह यह कि मनुष्य को माया से मुक्ति मिल जाए, जो भ्रम है वह टूट ज़ाए और आत्मा का परमात्मा से मिलन हो जाए। यह मानो गीता की दृष्टि में मुक्ति की अवस्था है। वशिष्ट मुनि के निकट मुक्ति यह है कि आत्मा अपने स्रोत की ओर लौट जाए और इच्छाएँ मिट जाएँ।

जैन धर्म में मुक्ति का अर्थ यह होता है कि मनुष्य को साक्षी-भाव

प्राप्त हो जाए। वह संसार से अपने को अलग कर ले। संसार में वह इस तरह न रहे कि उसे प्रत्येक चीज़ का ज्ञान हो, किन्तु अपना ही ज्ञान न हो; बल्कि उसे अपनी पहचान हो जाए। यह मुक्ति की अवस्था है। मुक्ति उनके निकट दो प्रकार की होती हैं—

(1) भाव-मुक्ति और (2) विदेह-मुक्ति।

जो कर्म घातक और हानिकारक हैं और जिन कर्मों से संसार में बिगाड़ उत्पन्न होता है, उन कर्मों से मनुष्य मुक्त हो जाए, तो उसे भाव-मुक्ति प्राप्त होती है। किन्तु वास्तविक मुक्ति विदेह-मुक्ति है। इस मुक्ति को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि वह उन कर्मों से भी छुटकारा पा ले जो घातक, हानिकारक और विनाशक नहीं हैं, क्योंकि ऐसे कर्म भी मनुष्य के लिए बन्धन बनते हैं। ऐसे कर्मों से भी मनुष्य छुटकारा पा ले, तो उसे वास्तविक मुक्ति प्राप्त होती है। उनका कहना है कि उसके प्राप्त करने हेतु ध्यान करना अनिवार्य है। साथ ही उसके लिए सम्यक् दृष्टि की आवश्यकता भी होती है। ज्ञान में कोई खोट और कमी न पाई जाती हो, कर्म भी सम्यक् हो और चरित्र भी सम्यक्; तभी मुक्ति प्राप्त होती है। इसके बिना मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। इस सम्बन्ध में भारत में एक धारणा यह भी पाई जाती है कि मुक्ति एक 'सालोक्य अवस्था' है अर्थात् 'ब्रह्म' जहाँ रहता है, उस लोक में मनुष्य पहुँच जाए या 'ब्रह्मलोक' का वासी बन जाए, इसे 'सालोक्य' कहा गया है। मुक्ति को 'निर्वाण' भी कहते हैं। यहाँ मुक्ति का अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य ईश्वर के निकट हो जाए या कोई विशेष स्थान प्राप्त कर लिया जाए; बल्कि मुक्ति का अर्थ है दुखों से छुटकारा पा जाना और हर इच्छा का मिट जाना। परन्तु यह मानव-प्रकृति के प्रतिकूल है। इसलिए बौद्ध मत में इसे पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया गया है।

एक दृष्टिकोण आवागमन और पुनर्जन्म का है। मुक्ति के सम्बन्ध

में लगभग हर सम्प्रदाय में यह माना जाता है कि मुक्ति का अर्थ है आवागमन से छुटकारा पाना। उपनिषद् में तीन लोक माने गए हैं। पहला वर्तमान लोक, दूसरा परलोक और तीसरा सांध्यलोक। सांध्यलोक को इस्लाम में 'बरज़ख़' कहा गया है, मरने के बाद जहाँ आत्माएँ रहती हैं। वेदों में आवागमन या पुनर्जन्म की धारणा नहीं पाई जाती। वेदों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि वास्तविक लोक दो ही हैं। एक वर्तमान लोक, दूसरा परलोक। वेदों के अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि मुक्ति यह है कि परलोक में मनुष्य को उच्च स्थान प्राप्त हो; जहाँ कामनाओं की कामनाएँ भी पूर्ण हों; जहाँ हर प्रकार का आनन्द और सुख हो; जहाँ मृत्यु का भय न हो; जहाँ किसी वियोग की चिन्ता न हो; जहाँ सुख ही सुख हो; जहाँ ईश्वर का राज्य हो; जहाँ सूर्य के स्थान पर ईश्वर का आलोक आलोकित होता है। वेदों में स्वर्ग अथवा जन्नत के बड़े ही सुन्दर और आकर्षक दृश्य प्रस्तुत किए गए हैं और नरक का दिल दहला देनेवाला वर्णन भी विस्तृत रूप में हुआ है। वेदों के अनुसार परलोक की सफलता ही वास्तविक सफलता और मुक्ति है।

स्वामी दयानन्द इस बात को स्वीकार नहीं करते हैं कि कोई मुक्ति शाश्वत होती है; जबकि वेदों से ज्ञात होता है कि जो मुक्ति प्राप्त होगी वह शाश्वत होगी, सदा-सर्वदा के लिए होगी, सामयिक या क्षणिक नहीं। स्वर्ग से किसी को निकाला नहीं जाएगा। परन्तु दयानन्दजी कहते हैं कि कर्म सीमित हैं। कर्मों की शक्ति समाप्त होने के पश्चात् मनुष्य को फिर से मृत्युलोक में भेज दिया जाएगा, ताकि वह पुनः कर्म करे। किन्तु यह विचार मानव-प्रकृति और वेदों के कथनों के प्रतिकूल है।

## ईसाई धर्म में मुक्ति की धारणा

ईसाई धर्म में मुक्ति के सम्बन्ध में जो बात कही गई है वह यह है कि मनुष्य ईश्वरीय राज्य (Kindom of God) में प्रवेश पा जाए, ईश्वरीय राज्य प्राप्त कर ले। इसकी चर्चा बाइबल में जगह-जगह मिलती

है। हज़रत ईसा मसीह (अलैहि०) ने विभिन्न उदाहरणों से इसे समझाने का प्रयास किया है कि ईश्वरीय राज्य क्या है, जिसमें प्रवेश पाना है। किन्तु आश्चर्य की बात है कि इसके लिए किसी नियम की आवश्यकता महसूस नहीं की गई, बल्कि मनुष्य मसीह (अलैहि०) पर ईमान ले आए; बस यही पर्याप्त है। विधान (शरीअत) को निष्क्रिय और निर्जीव कर दिया गया और कहा गया कि मसीह (अलैहि०) ने हमारे पापों का प्रायश्चित कर दिया है। वे सूली पर चढ़ कर हमारे पापों का प्रायश्चित बन गए। यह धारणा मनुष्य को नैतिक चरित्र से विमुख कर देती है।

## यहूदी धर्म में मुक्ति की धारणा

यहूदी धर्म में और भी आश्चर्यजनक बात पाई जाती है। वे स्वयं को ईश्वर का चहेता और चयनित समझते हैं। स्वयं अपनी दृष्टि में वे उच्च हैं और उनका मानना है कि सम्पूर्ण मानव-जाति में उन्हें महानता और श्रेष्ठता प्राप्त है। वे ईश्वर के प्रिय हैं। इसलिए उनके साथ ईश्वर का व्यवहार अत्यन्त मधुर और विशिष्ट होगा। उनका कहना है कि अगर हमारे लिए दुख और कष्ट है, तो वह सामयिक और क्षणिक है, केवल कुछ ही समय के लिए है, शेष सुख ही सुख है। हाँ, वे मुक्तिदाता की धारणा को भी मानते हैं और कहते हैं कि कोई मुक्तिदाता अवश्य आएगा और वह ऐसी सत्ता स्थापित करेगा कि सब हमारे अधीन हो जाएँगे और हमें पूर्ण रूप से प्रभुत्व प्राप्त होगा!

## इस्लाम में मुक्ति की धारणा

इस्लाम में 'नजात' या 'मुक्ति' की जो धारणा पाई जाती है, वह शुष्क और नीरस नहीं है। मुक्ति के विषय में जो भी सुखद और आनन्ददायक बात कही जा सकती है, वह सभी कुछ इस्लाम की मुक्ति-सम्बन्धी धारणा में विद्यमान है। यहाँ आवागमन से नहीं, बल्कि ईश्वर के प्रकोप और नरकाग्नि से छुटकारा पाने को 'वास्तविक मुक्ति'

कहा गया है। परन्तु इसी के साथ इस्लाम ने मुक्ति की अत्यन्त अर्थपूर्ण और व्यापक धारणा भी प्रस्तुत की है। नजात या मुक्ति का सम्बन्ध हमारे वर्तमान जीवन से भी है। वर्तमान जीवन ही में व्यक्ति पूर्णकाम और सफल हो जाता है, जिसका पूर्ण प्रदर्शन परलोक या आख़िरत में होगा। पवित्र क़ुरआन में कहा गया है–

"प्रत्येक व्यक्ति अपनी कमाई के कारण बन्धक या अमुक्त है।"

(52:21)

मतलब यह है कि मनुष्य मुक्त ही पैदा हुआ है, लेकिन बुरे और अनिष्ट कर्म, जिनकी हैसियत कमाई की है, उसे अमुक्त दशा में पहुँचा देते हैं। इसके विपरीत अच्छे या शुभ-कर्म उसे मुक्त करते हैं और उसकी मुक्ति-दशा को सुदृढ़ बनाते हैं। क़ुरआन से ज्ञात होता है कि मनुष्य अपनी ग़लत कमाई और अपनी बुरी धारणाओं के कारण अमुक्त दशा में रहता है। किन्तु जो भाग्यशाली लोग हैं, उन्हें परलोक में ही नहीं, इस लोक में भी मुक्ति-दशा प्राप्त हो जाती है। ये कौन हैं? ये वे लोग हैं जो सांसारिक लोक में ईश्वर की ओर उन्मुख रहते हैं और उसी के सामने झुकते और अपने प्रेम और भक्ति-भाव व्यक्त करते हैं। इसी के साथ-साथ वे लोगों के हक़ों और अधिकारों की रक्षा करते हैं, विशेष रूप से असहाय लोगों को वे बेसहारा नहीं छोड़ते। हर प्रकार से वे उनके सहायक होते हैं। वे उनको भोजन भी कराते हैं और उनकी अन्य आवश्यकताओं का ख़याल भी रखते हैं। वे इस बात को विस्मृत नहीं करते कि ईश्वर उनके विषय में अन्तिम फ़ैसला करेगा और लोग खुली आँखों देख लेंगे कि मुक्त लोग कौन हैं और मुक्ति के पात्र और अधिकारी कैसे होते हैं। इस्लामी दृष्टिकोण से किसी की सत्य धारणाएँ और उसके अच्छे कर्म इसके प्रतीक होते हैं कि वे मुक्त हैं और मुक्ति के पात्र हैं। इसके विपरीत सत्य के प्रतिकूल मनुष्य की धारणाएँ और विचार एवं सत्य-विरोधी गतिविधियाँ बताती हैं कि न तो उसे ईश्वर की

ओर से अमान और सुरक्षा प्राप्त है और न ही वह मुक्त-दशा में अपनी ज़िन्दगी गुज़ार रहा है। परलोक में उसका ठिकाना नरक के अतिरिक्त और कहीं नहीं होगा। (देखें—क़ुरआन, 74:35,36)

इस्लाम में मुक्ति-अवस्था के विषय में एक मार्मिक बात यह भी कही गई है कि आत्मिक विकास ही मनुष्य को मुक्ति का अधिकारी बनाता है, आत्मा का विकसित न होना स्वयं किसी नरक से कम नहीं।

इस्लाम की दृष्टि में कोई महान कार्य हो ही नहीं सकता, जब तक हमारी आत्मा विकसित न हो। विकसित आत्माएँ हर प्रकार की मुक्ति को अपने में समेटे होती हैं। वे न मुक्ति से दूर होते हैं और न मुक्ति उनसे विलग होती है। ऐसे लोगों के बारे में पवित्र क़ुरआन में कहा गया है—

> "सफल हो गया वह व्यक्ति जिसने आत्म-विकास प्राप्त कर लिया।" (87:14)

जो व्यक्ति होशपूर्ण जीवन व्यक्ति कर रहा हो, जिसे होशमन्दी (awareness) प्राप्त है, वास्तव में उसी का जीवन, जीवन है। शेष लोग ऐसे जी रहे हैं, जैसे जड़ पदार्थ हों। इस्लाम हमें जड़ता से बचाता है। लोगों में साधारणतया जो जड़ता पाई जाती है, उससे मुक्त होने का प्रयास न करना अक्षम्य अपराध है। संवेदनशील और चेतनायुक्त व्यक्तियों का आचरण सत्य और ईश्वर की योजना के विरुद्ध कदापि नहीं हो सकता।

मुक्ति सत्य में है। सत्य के विरुद्ध नीति अपनानेवाले कभी भी मुक्ति नहीं पा सकते। दुखद यातनाएँ उनका भाग्य बन चुकी होंगी। वे ज़िस वेदना और सन्ताप में ग्रस्त होंगे, उसकी आज हम कल्पना भी नहीं कर सकते। इसी एहसास के अन्तर्गत आपके समक्ष मुक्ति और सफलता के विषय को रखा गया। यह विषय वास्तव में जीवन का मौलिक विषय है। इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। यदि लोग मुक्ति

के वास्तविक अर्थ और जीवन पर पड़नेवाले उसके प्रभाव को समझ लें और उसके अनुसार ही उनकी जीवन-शैली और कार्य-प्रणाली भी हो जाए तो वर्तमान युग की कितनी ही समस्याएँ हैं, जिनसे हम जूझ रहे हैं, वे स्वतः ही हल हो जाएँ और हम हर प्रकार के संकट से छुटकारा पा लें और यह जगत् ऐसे बाग़ के सदृश हो जाए कि हर व्यक्ति की दशा खिले हुए पुष्प की-सी हो जाए। हमें इस बात से सबक़ लेना चाहिए कि बाग़ के फूल आपस में लड़ते नहीं, बल्कि सब मिलकर बाग़ की शोभा बढ़ाते हैं।

✧✧

# वास्तविक सफलता और मुक्ति इस्लाम की नज़र में

✍ डॉ॰ मुहम्मद रज़ी-उल-इस्लाम नदवी

## सफलता-प्राप्ति : हर व्यक्ति की स्वाभाविक इच्छा

हर व्यक्ति के दिल में स्वाभाविक इच्छा पाई जाती है कि वह एक सफल मनुष्य की हैसियत से जीवन व्यतीत करे। वह जो भी योजनाएँ बनाए वे पूरी हों, जिन चीज़ों की कामना करे, वे उसे मिल जाएँ और जिस मंज़िल तक पहुँचने का इरादा करे बिना किसी रुकावट के वहाँ तक पहुँच जाए। अगर वह अपने गन्तव्य (मंज़िले-मक़्सूद) तक पहुँच जाता है और अपने लक्ष्य रूपी मोती को प्राप्त कर लेता है तो ख़ुद को सफल और सौभाग्यशाली समझता है और अगर उसके सपने अधूरे रह जाते हैं और उसकी तमन्नाएँ पूरी नहीं हो पाती हैं तो ख़ुद को असफल मनुष्य समझता है और अपने दुर्भाग्य पर आँसू बहाता है।

## सफलता के अलग-अलग पैमाने

लेकिन विभिन्न मनुष्यों ने सफलता के अलग-अलग पैमाने बना रखे हैं। कुछ लोगों के नज़दीक सफलता यह है कि उनके पास धन-दौलत की रेल-पेल हो, उन्हें हर तरह की सुख-सुविधाएँ प्राप्त हों, साधनों और संसाधनों की बहुलता हो, बड़े-बड़े, आरामदेह और सुन्दर बंगले, लग्ज़री गाड़ियाँ और सेवा में लगे रहनेवाले नौकर-नौकरानियाँ हों। उन्हें पद और प्रतिष्ठा प्राप्त हो, समाज में उन्हें मान-सम्मान की दृष्टि से देखा जाता हो, दूसरे लोग उनका आदर करते और उनके आगे-पीछे लगे रहते हों। उनका व्यापार ज़ोरों पर हो, उनकी आमदनी में दिन दुनी रात चौगुनी बढ़ोत्तरी हो रही हो और उनका बैंक बैलेंस बढ़ रहा हो। कुछ

लोग शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक शान्ति को सफलता का पैमाना घोषित करते हैं। उनके नज़दीक अगर कोई आदमी पूरी तरह स्वस्थ हो, उसे किसी तरह की कोई बीमारी या रोग न हो, वह हर तरह की मानसिक और मनोवैज्ञानिक परेशानियों से सुरक्षित हो और सुख-शान्ति और संतोष भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहा हो, वह सफल है।

कुछ लोगों की नज़र में किसी आदमी की सफलता यह है कि वह अपनी निगाहों के सामने अपने ख़ानदान को फलता-फूलता और अपने बाल-बच्चों और दूसरे नाते-रिश्तेदारों को तरक़्क़ी व उन्नति करता हुआ देख ले। कहने का मतलब यह है कि विभिन्न लोगों की दृष्टि में सफलता के अलग-अलग पैमाने हैं, जिनपर वे अपने और दूसरों के मामलों को जाँचते-परखते हैं और उनके अनुसार सफलता और असफलता का फ़ैसला करते हैं।

## शाश्वत सफलता की इच्छा स्वाभाविक है

आदमी की एक स्वाभाविक इच्छा यह भी होती है कि उसने सफलता का जो स्तर क़ायम किया है, वह उसे हमेशा प्राप्त रहे। अगर उसके नज़दीक धन-दौलत की प्रचुरता सफलता का असूल मानदण्ड है तो चाहता है कि वह हमेशा उसे हासिल रहे; वह कभी उससे वंचित न हो। अगर उसकी नज़र में सफलता का अर्थ सत्ता, शासन और अधिकार है, तो वह इच्छुक रहता है कि सत्ता, शासन और अधिकार की कुंजियाँ हमेशा उसकी मुट्ठी में हों। अगर व्यापार की तरक़्क़ी को वह सफलता समझता है, तो इच्छा रखता है कि वह बराबर तरक़्क़ी करता रहे और कभी उसमें घाटा न हो। किसी भी मामले में अगर निरन्तरता में फ़र्क़ पड़ता है या अस्थायी रूप से ही सही, वह उससे वंचित होता है तो उसे असफलता समझता है।

इन सभी लोगों की सोच इस दुनिया की ज़िन्दगी तक ही सीमित है। वे इसी में मगन और इसी को बेहतर बनाने के लिए सतत् प्रयासरत

रहते हैं। इसलिए सफलता के बारे में उनकी मान्यताएँ भी सीमित और त्रुटिपूर्ण हैं। इसके विपरीत इस्लाम ज़िन्दगी की सर्वव्यापी और सर्वांगपूर्ण अवधारणा प्रस्तुत करता है। इसलिए इसकी अवधारणा सफलता की उपर्युक्त सभी धारणाओं से बिलकुल अलग और सर्वश्रेष्ठ है।

## ज़िन्दगी की इस्लामी अवधारणा

प्रत्येक व्यक्ति इस दुनिया में पैदा होता है, पलता-बढ़ता है, उम्र की विभिन्न अवस्थाओं से गुज़रता है; यहाँ तक कि मौत की गोद में पहुँच जाता है। इस्लाम की नज़र में यह उसकी पूरी ज़िन्दगी नहीं है, बल्कि एक मरहला या चरण है। मरने के बाद उसकी ज़िन्दगी का दूसरा मरहला या चरण शुरू होगा, जिसे वह 'आख़िरत' (परलोक) का नाम देता है। इस्लाम कहता है कि दुनिया की ज़िन्दगी अस्थायी और कुछ ही दिनों की है, जबकि आख़िरत की ज़िन्दगी शाश्वत और अमर होगी। जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी को ही सब कुछ समझते हैं, वे धोखे में हैं।

इस्लाम कहता है कि इस दुनिया में आदमी का वुजूद या अस्तित्व किसी आकस्मिक घटना या संयोग का परिणाम नहीं है, बल्कि उसे एक सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ हस्ती ने एक सुविचारित योजना के तहत पैदा किया है। इसके सृजन का उद्देश्य यह है कि वह दुनिया में उसके बताए हुए तरीक़े के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे। उसने अपने चुने हुए पसन्दीदा बन्दों के ज़रिए, जिन्हें रसूल, ईशदूत या सन्देष्टा कहा जाता है, वह ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़ों को स्पष्ट शब्दों में बयान कर देता है। सबसे आख़िर में उसने ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को सारे मनुष्यों के मार्गदर्शन के लिए भेजा और उनपर अपनी किताब 'क़ुरआन' उतारी, जिसमें ज़िन्दगी गुज़ारने का सही तरीक़ा खोल-खोल कर बयान कर दिया गया है। लेकिन साथ ही, इस दुनिया में इन्सानों को इरादे और चयन की आज़ादी भी दी गई है। वे चाहें तो हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और क़ुरआन मजीद पर ईमान लाएँ और चाहें तो इनकार कर दें; चाहें तो

उनके बताए हुए तरीक़े के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें और चाहें तो अपनी मर्ज़ी चलाएँ।

इस्लाम स्पष्ट शब्दों में कहता है कि इस दुनिया में मनुष्य परीक्षा और आज़माइश की हालत में है। अगर वह यहाँ अल्लाह और उसके रसूल के बताए हुए तरीक़े के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारेगा तो अल्लाह उससे ख़ुश होगा और मरने के बाद की ज़िन्दगी में उसे हर तरह के इनामों से मालामाल कर देगा और अगर वह इस तरीक़े का उल्लंघन करेगा और मनमानी करेगा तो अल्लाह उससे नाराज़ होगा और मरने के बाद की ज़िन्दगी में उसे सज़ा देगा। इनाम के तौर पर उसे जन्नत (स्वर्ग) में दाख़िल किया जाएगा और सज़ा के तौर पर उसे जहन्नम (नरक) में डाल दिया जाएगा।

## परलोक की सफलता ही सच्ची सफलता है

इस्लाम ने मरने की बाद की ज़िन्दगी को बहुत महत्त्व दिया है और उसके बारे में बहुत विस्तार से छोटी-बड़ी हर चीज़ के बारे में जानकारियाँ उपलब्ध कराई हैं। वह कहता है कि सारे मनुष्य परलोक में सारे जहानों के पालनहार रब के सामने पेश होंगे और उनसे दुनिया में किए गए सारे कामों का हिसाब लिया जाएगा और उनके कामों को तौला जाएगा। जिन लोगों ने दुनिया में अच्छे और भले काम किए होंगे वे सफल समझे जाएँगे और उन्हें जन्नत का हक़दार क़रार दिया जाएगा और जिन लोगों ने दुनिया में बुरे काम किए होंगे वे उनके असफल होने का एलान कर दिया जाएगा और सज़ा के तौर पर उन्हें नरक में झोंक दिया जाएगा। जन्नत में जानेवालों को वहाँ कौन-कौन-सी नेमतें (अनुपम ईश्वरीय कृपादान) मिलेंगी और नरक में डाले जानेवाले को वहाँ कैसी-कैसी भयंकर यातनाओं से दो-चार होना पड़ेगा, क़ुरआन मजीद में इसका बहुत विस्तार से वर्णन किया गया है।

इस्लाम की नज़र में सच्ची सफलता, जिसे वह 'मुक्ति' (फ़लाह)

और 'कल्याण' (फ़ैज़) के शब्दों से बयान करता है, यह है कि परलोक में जब आदमी के कर्म तौले जाएँगे तो अगर उसके अच्छे कर्मों का पलड़ा भारी हो जाएगा, तो उसे स्वर्ग का हक़दार क़रार दिया जाएगा और इस्लाम की नज़र में यही सबसे बड़ी सफलता है। इसके विपरीत जिस आदमी के अच्छे कर्मों का पलड़ा परलोक में हलका होगा, तो इसकी वजह से उसे नरक में डाला जाएगा; जो इस्लाम की नज़र में वास्तव में सबसे बड़ी असफलता और घाटे का सौदा है। क़ुरआन में कहा गया है—

> "उस समय जिनके पलड़े भारी होंगे वही सफलता प्राप्त करेंगे और जिनके पलड़े हलके होंगे वही लोग होंगे जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाल लिया। वे जहन्नम (नरक) में हमेशा रहेंगे। आग उनके चेहरों की खाल चाट जाएगी और उनके जबड़े बाहर निकल आएँगे।" (क़ुरआन, 23: 102-104)

परलोक में जिन लोगों को सफल घोषित किया जाएगा, उनको स्वर्ग में किन-किन नेमतों से नवाज़ा जाएगा, इसका उल्लेख क़ुरआन में बहुत-सी जगहों पर किया गया है। एक जगह अल्लाह तआला कहता है—

> "अल्लाह का डर रखनेवाले निश्चिन्तता की जगह होंगे। बाग़ों और स्रोतों (चश्मों) में रेशम और कमख़ाब के वस्त्र पहने, आमने-सामने बैठे होंगे। यह होगा उनका गौरव। और हम गोरी-गोरी मृगनैनी स्त्रियों से उनका विवाह कर देंगे; जहाँ वे निश्चिन्ततापूर्वक हर प्रकार की स्वादिष्ट चीज़ें तलब करेंगे। वहाँ मृत्यु का मज़ा वे कभी न चखेंगे। बस दुनिया में जो मृत्यु आ चुकी, सो आ चुकी और अल्लाह अपने अनुग्रह से उनको नरक की यातना से बचा देगा। यही बड़ी सफलता है।"
>
> (क़ुरआन, 44:51-57)

निष्कर्ष यह कि इस्लाम की नज़र में परलोक में स्वर्गवाले सफल हैं और नरक में जानेवाले असफल। पवित्र क़ुरआन में कहा गया है—

> "जहन्नम (नरक) में जानेवाले और जन्नत (स्वर्ग) में जानेवाले कभी समान नहीं हो सकते। जन्नत में जानेवाले ही वास्तव में सफल हैं।" (क़ुरआन, 59:20)

## दुनिया ही को सब कुछ समझनेवाले असफल और घाटे में हैं

जो लोग समझते हैं कि दुनिया की ज़िन्दगी ही सब कुछ है; यहीं वे पैदा हुए हैं और यहीं एक दिन मर जाएँगे, मरने के बाद दोबारा ज़िन्दगी नहीं मिलेगी, वे दुनिया के भोग-विलास की चीज़ों से फ़ायदा उठाने में इतने बुरी तरह मगन हो जाते हैं कि उन्हें अच्छे-बुरे की कोई अनुभूति ही नहीं रहती। इस्लाम की नज़र में ये लोग घाटे में रहनेवाले हैं। दुनिया में जो कुछ ये लोग करते हैं, उसकी परलोक में कोई अहमियत नहीं होगी। परन्तु वहाँ नरक ही उनका ठिकाना होगा। पवित्र क़ुरआन में है—

> "(ऐ नबी!) उनसे कहो : क्या हम तुम्हें बताएँ कि अपने कर्मों में सबसे ज़्यादा असफल और नामुराद लोग कौन हैं?—वे कि दुनिया की ज़िन्दगी में जिनकी सारी कोशिश सीधे मार्ग से भटकी रही और वे समझते रहे कि वे सब कुछ ठीक कर रहे हैं। ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब की आयतों को मानने से इनकार किया और उसके सामने पेशी का यक़ीन न किया। इसलिए उनके सारे कर्म अकारथ हो गए, क़ियामत (महाप्रलय) के दिन हम उन्हें कोई वज़न न देंगे। उनका बदला नरक है उस इनकार के बदले में जो उन्होंने किया और उस मज़ाक़ के बदले में जो मेरी आयतों और मेरे रसूलों के साथ करते रहे।"
>
> (क़ुरआन, 18:103-106)

## सफल वास्तव में कौन लोग हैं?

इस्लाम की नज़र में वास्तव में सफल कौन लोग हैं? उनका उल्लेख क़ुरआन में विस्तार से किया गया है और बताया गया है कि दुनिया में वे लोग किस तरह ज़िन्दगी गुज़ारते हैं? उनका रवैया कैसा होता है? और उनसे कैसे कर्म सम्पादित होते हैं? यहाँ उनकी कुछ महत्त्वपूर्ण ख़ूबियों का उल्लेख किया जाता है—

(i) वे सिर्फ़ अल्लाह पर ईमान लाते हैं और उसी पर भरोसा करते हैं। न उसके साथ किसी को साझी ठहराते हैं, न उसकी आयतों का इनकार करते हैं—

"उन ईमानवाले मर्दों और ईमानवाली औरतों से अल्लाह का वादा है कि उन्हें ऐसे बाग़ देगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी और वे उनमें हमेशा रहेंगे। उन सदाबहार बाग़ों में उनके लिए ठहरने की पाकीज़ा जगहें होंगी। और सबसे बढ़कर यह कि अल्लाह की प्रसन्नता उन्हें प्राप्त होगी। यही बड़ी सफलता है।" (क़ुरआन, 9:72)

"और अगर किसी ने ईमान की नीति पर चलने से इनकार किया तो ज़िन्दगी में उसका सारा किया-धरा अकारथ हो जाएगा और वह आख़िरत में दिवालिया होगा।" (क़ुरआन, 5:5)

"और जो लोग अल्लाह की आयतों का इनकार करते हैं, वही घाटे में रहनेवाले हैं।" (क़ुरआन, 39:63)

"अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा सारा कर्म व्यर्थ हो जाएगा और तुम घाटे में रहोगे।" (क़ुरआन, 39:65)

"और जो कोई अल्लाह के साथ किसी और पूज्य को पुकारे, जिसके लिए उसके पास कोई प्रमाण नहीं, तो उसका हिसाब उसके रब के पास है। ऐसे इनकार करनेवाले कभी

सफलता प्राप्त नहीं कर सकते।" (क़ुरआन, 23:117)

(ii) वे अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) पर ईमान लाते हैं और अल्लाह का रसूल अल्लाह की ओर से आदेश और मार्गदर्शन प्रस्तुत करता है, उसे मानता और उसी के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारता है—

"अतः जो लोग इसपर ईमान लाएँ और इसकी सहायता और समर्थन करें और उस प्रकाश का अनुसरण ग्रहण करें जो इसके साथ अवतरित हुआ है, वही सफल होनेवाले हैं।"
(क़ुरआन, 7:157)

(iii) वे परलोक की ज़िन्दगी पर ईमान रखते हैं—

"हक़ीक़त यह है कि जो लोग आख़िरत अर्थात् परलोक को नहीं मानते उनके लिए उनकी करतूतों को शोभायमान बना दिया गया है, इसलिए वे भटकते फिरते हैं। ये वे लोग हैं जिनके लिए बुरी सज़ा है और आख़िरत में भी यही सबसे ज़्यादा घाटे में रहनेवाले हैं।" (क़ुरआन, 27:52)

(iv) वे अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करते हैं और उनके आदेशों का पालन करते हैं—

"जो अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करें और अल्लाह से डरें और उसकी अवज्ञा से बचें, वही सफल हैं।" (क़ुरआन, 24:52)

"जो अल्लाह और उसके रसूल का कहा मानेगा, उसे अल्लाह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी और उन बाग़ों में वह हमेशा रहेगा और यही बड़ी सफलता है।" (क़ुरआन, 4:113)

(v) वे ईमान लाने के साथ अच्छे काम भी करते हैं—

"जो आदमी अल्लाह पर ईमान रखता होगा और अच्छा

कर्म करता होगा अल्लाह तआला उसके गुनाह दूर कर देगा और उसे जन्नत के ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे से नहरें बहती होंगी। ये लोग हमेशा-हमेशा उनमें रहेंगे। यही बड़ी सफलता है।" (क़ुरआन, 64:9)

"फिर जो लोग ईमान लाए थे और अच्छे कर्म करते रहे थे, उन्हें उनका रब अपनी दयालुता में दाख़िल करेगा और यही खुली सफलता है।" (क़ुरआन, 45:30)

(vi) अल्लाह तआला ने उन्हें जो कुछ धन-दौलत दी है, उसमें दूसरे मनुष्यों का हक़ पहचानते हैं, उसे सैंत-सैंत कर नहीं रखते, बल्कि अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं—

"अतः रिश्तेदार को उसका हक़ दो और मुहताज और मुसाफ़िर को उसका हक़। यह तरीक़ा बहुत अच्छा है उन लोगों के लिए जो अल्लाह की प्रसन्नता के इच्छुक हों, और वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं।" (क़ुरआन, 30:38)

"और सुनो और आज्ञा का पालन करो, और अपने माल ख़र्च करो यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है। जो अपने दिल की तंगी से सुरक्षित रह गए, बस वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं।" (क़ुरआन, 64:16)

(vii) वे शैतान के बहकावे में नहीं आते और ग़लत कामों में नहीं फँसते—

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, ये शराब और जुआ और ये देव-स्थान और पाँसे, ये सब गन्दे शैतानी काम हैं, इनसे बचो। उम्मीद है कि तुम्हें सफलता प्राप्त होगी।" (क़ुरआन, 5:90)

"जिसने अल्लाह के बजाय शैतान को अपना सरपरस्त (संरक्षक) बना लिया वह खुले घाटे में पड़ गया।"

(क़ुरआन, 4:119)

(viii) वे अपनी मन की शुद्धता पर ध्यान देते हैं, उन्हें गुनाहों से दूषित नहीं करते और अल्लाह की अवज्ञा से डरते हैं—

> "यक़ीनन सफलता पा गया वह जिसने आत्मा को विशुद्ध एवं विकसित किया और असफल हुआ वह जिसने उसको दबा दिया।" (क़ुरआन, 91:9,10)

> "अल्लाह से डरते रहो, शायद कि तुम्हें सफलता प्राप्त हो जाए।" (क़ुरआन, 2:189)

(ix) वे खुद तो भले और नेक बने रहते ही हैं, दूसरों को भी भलाई की ओर बुलाते हैं और बुराइयों से रोकते हैं—

> "तुममें कुछ लोग तो ऐसे अवश्य ही रहने चाहिएँ जो नेकी की ओर बुलाएँ, भलाई का आदेश दें और बुराइयों से रोकते रहें। जो लोग ये काम करेंगे वही सफलता प्राप्त करेंगे।" (क़ुरआन, 3:104)

## वास्तविक मोक्ष परलोक में नरक से मुक्ति है

मनुष्य की मुक्ति (नजात, मोक्ष) किस चीज़ में है? विभिन्न धर्म और विचारधाराएँ इसका अलग-अलग अन्दाज़ से जवाब देते हैं। इस्लाम कहता है कि वास्तविक मोक्ष परलोक का मोक्ष (नजात) है। मरने के बाद सारे मनुष्यों को अल्लाह तआला दोबारा जीवित करेगा और उनसे दुनिया की ज़िन्दगी के कामों का हिसाब लेगा। जिन लोगों ने दुनिया में अल्लाह का इनकार किया होगा, उसके आदेशों और उसकी शिक्षाओं को झुठलाया होगा और बुरे काम किए होंगे, उसकी सज़ा में वे नरक में डाल दिए जाएँगे। लेकिन जिन लोगों ने दुनिया में उस के हुक्मों पर अमल किया होगा और अच्छे काम किए होंगे, उनको वह नरक से बचा लेगा और स्वर्ग में दाख़िल करेगा। यही लोग मोक्ष पानेवाले हैं और यही लोग सफल हैं—

> "क़ियामत के दिन तुम देखागे जिन लोगों ने अल्लाह पर

झूठ बाँधा है उनके मुँह काले होंगे। क्या नरक अहंकारियों के लिए काफ़ी जगह नहीं है? इसके विपरीत जिन लोगों ने यहाँ डर रखा है उनकी सफलता-उपक्रम के कारण अल्लाह उन्हें मुक्ति प्रदान करेगा। उनको न कोई कष्ट और हानि पहुँचेगी और न वे ग़मगीन होंगे।" (क़ुरआन, 39:60,61)

"उस दिन जो सज़ा से बच गया, उसपर अल्लाह ने बड़ी ही दया की और यही खुली सफलता है।" (क़ुरआन, 6:16)

धन्यवाद के पात्र हैं वे लोग जो दुनिया की ज़िन्दगी में मिलनेवाली मामूली और क्षणिक सफलताओं पर फूले न समाने के बजाय परलोक की ज़िन्दगी को अपने सामने रखें, उसके लिए तैयारी करें और वहाँ सफलता प्राप्त करने के लिए क़ुरआन में जिन गुणों और विशेषताओं का उल्लेख किया गया है, उनको अपने अन्दर पैदा करने की कोशिश करें।

✧✧

# सफलता और मुक्ति की वास्तविक धारणा

✍ मुहम्मद इक़बाल मुल्ला

इस संसार में हर आदमी अपनी सफलता का सपना देखता है और असफलता से बचना चाहता है। यही मामला मुक्ति का है। आदमी अपनी मुक्ति की चिन्ता करता है। कोई आदमी नहीं चाहेगा कि उसकी मुक्ति का मामला ख़तरे में पड़ जाए और वह मुक्ति से वंचित हो जाए।

हाँ, जीवन की सफलता और मुक्ति की धारणाएँ संसार में अलग-अलग पाई जाती हैं। हालाँकि उन धारणाओं में परस्पर कुछ बातें सामान्य भी हो सकती हैं, लेकिन उन धारणाओं में ज़्यादातर परस्पर मतभेद और विरोध ही पाया जाता है। फिर उन धारणाओं के तहत सफलता और मुक्ति की प्राप्ति के तरीक़े भी अलग-अलग हैं।

क्या एक ही समय में सफलता और मुक्ति की बहुत-सी और परस्पर विरोधी धारणाएँ सही और सच्ची हो सकती हैं? इसी तरह क्या इसको प्राप्त करने के विभिन्न तरीक़े सही हो सकते हैं? इन प्रश्नों पर विचार करने की ज़रूरत है। सफलता और मुक्ति की वास्तविक धारणा कौन-सी है और उसकी प्राप्ति का सही तरीक़ा क्या हो सकता है? आइए, इन प्रश्नों का सही और तर्कपूर्ण उत्तर ढूंढने का प्रयास करें।

## एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न

एक मूल प्रश्न यह है कि यदि इस जगत् का कोई स्रष्टा है (इस सच्चाई से इनकार और पलायन सम्भव नहीं), तो क्या उसने अपनी सर्वाधिक प्रिय और पसन्दीदा सृष्टि अर्थात् मानव-जाति को सफलता और मुक्ति का मार्ग पहले ही दिन से नहीं बताया था? निस्सन्देह स्रष्टा इतना निर्दयी और अत्याचारी नहीं हो सकता कि उसने आदमी की छोटी-बड़ी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति में गौण और छोटी-छोटी बातों

का तो ध्यान रखा, लेकिन लोक-परलोक दोनों में मानव-जाति की सफलता, उसके कल्याण और मुक्ति के सम्बन्ध में कोई मार्गदर्शन नहीं किया होगा; बल्कि इसके विपरीत जीवन की सफलता और मुक्ति की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण समस्या को हल करने के लिए स्वयं मनुष्य पर ज़िम्मेदारी डाल दी, जबकि इस समस्या के समाधान के लिए मनुष्य के पास वह ज्ञान है, न योग्यता और न सामर्थ्य। मनुष्य की बुद्धि, उसके अनुभव, इतिहास और विज्ञान पहले ही चरण पर इस समस्या का समाधान करने में असफल हैं; क्योंकि सफलता और मुक्ति की सही और विशुद्ध अवधारणा और उसकी प्राप्ति का सन्तोषजनक उपाय इनमें से किसी ने भी प्रस्तुत नहीं किया। विज्ञान का कार्य-क्षेत्र अनुभव में आनेवाले भौतिक पदार्थ या तत्त्व हैं। सफलता और मुक्ति के कितने ही पहलू ऐसे हैं जिनका सम्बन्ध भौतिक संसार और अनुभूतिजन्य पदार्थों के साथ-साथ नैतिक, आध्यात्मिक और मृत्यु के बाद के जीवन से सम्बन्धित हैं अर्थात् भौतिक पदार्थों की परिधि से बिलकुल बाहर। दार्शनिकों और विचारकों ने बुद्धि और अनुभव की सहायता से चिन्तन-मनन, अनुमान, कल्पना और प्रत्यक्षण के आधार पर सफलता और मुक्ति से सम्बद्ध सैकड़ों विचार और दर्शन प्रस्तुत किए, जिनमें परस्पर मतभेद और विरोध पाए जाते हैं। वैज्ञानिक भी इस समस्या में हमारी सहायता नहीं कर सकते; क्योंकि उनके क्रिया-कलापों और प्रयासों की परिधि और सीमा भौतिक पदार्थ और भौतिक संसार तक ही सीमित है।

दार्शनिकों और वैज्ञानिकों के अनगिनत और परस्पर विरोधी दृष्टिकोण और विचारधाराएँ इस बात के अकाट्य और ज्वलन्त प्रमाण हैं कि वे सफलता और मुक्ति के बारे में सही और सन्तोषजनक मार्गदर्शन नहीं करते और न कभी कर सकते हैं। जहाँ तक इतिहास का सम्बन्ध है, तो यह भी हमारा मार्गदर्शन नहीं कर सकता। इतिहास से

विभिन्न जातियों के उत्थान-पतन, उनके कारणों, परिणामों और प्रभावों के बारे में जानकारी मिलती है। लेकिन यह केवल भौतिक और सांसारिक पहलुओं का निरीक्षण और अवलोकन है। मनुष्य चाहे व्यक्ति हो या समाज और व्यवस्था, केवल भौतिक ही नहीं, बल्कि एक नैतिक और आध्यात्मिक अस्तित्व भी रखता है। वह केवल भौतिक नियमों (Physical Laws) में ही जकड़ा हुआ नहीं है, बल्कि नैतिक अस्तित्व और नैतिक नियमों का भी पाबन्द बनाया गया है। दार्शनिकों, वैज्ञानिकों और इतिहास की असफलता के बाद सफलता और मुक्ति के सम्बन्ध में हमारे मार्गदर्शन के लिए मैदान में केवल धर्म बाक़ी रह जाता है।

जीवन की सफलता के बारे में पुरानी और नई विचारधाराओं, दर्शनों और दृष्टिकोणों की एक कमज़ोरी यह भी रही है कि इन सभी ने मनुष्य की सफलता और असफलता को सांसारिक जीवन तक सीमित कर दिया है। मृत्यु के बाद के जीवन के इनकार या उसमें सन्देह के आधार पर परलोक के जीवन में सफलता या असफलता की कोई धारणा उनमें नहीं पाई जाती। उनके नज़दीक सफलता का अर्थ केवल यह है कि मनुष्य सिर्फ़ और सिर्फ़ सांसारिक सुख-सम्पन्नता, मनेच्छाओं की बिना रोक-टोक पूर्ति, भौतिक पदार्थों की प्रचुरता और जीवन के भरपूर साधनों को प्राप्त करने के लिए कोल्हू के बैल की तरह लगा रहे, रात-दिन भौतिकता के पीछे अन्धाधुन्ध सरपट दौड़ता रहे; ताकि इस तरह भोग-विलास की ज़िन्दगी जी सके। बस भोग-विलास के साधनों की प्राप्ति ही सफलता है।

संसार में उपलब्ध पाक-साफ़ और पवित्र ईश्वरीय उपहारों, कृपादानों को उचित और सही ढंग से कठोर परिश्रम के द्वारा प्राप्त करना और जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं, अपनी उचित इच्छाओं और मनोकामनाओं को पूरा करना ग़लत बात नहीं, अत्यन्त सराहनीय और धर्म-सम्मत बात हैं। परन्तु उपर्युक्त चीज़ों को प्राप्त करने के लिए

ग़लत, अनुचित और भ्रष्ट तरीक़े अपनाकर भौतिक पदार्थों का बहुत बड़ा ढेर लगा लेना अत्यन्त घृणित कर्म, अक्षम्य अपराध, पाप, अत्याचार और अन्याय है; दूसरों के अधिकारों पर डाका डालना है। यह सफलता बिलकुल ही नहीं है। यदि इसे सफलता मान लिया लिया जाए, तो फिर ऐसे लोगों के समूह और पारस्परिक सम्बन्ध से किसी कल्याणकारी मानव-समाज का निर्माण नहीं हो सकता; वहाँ जंगलराज ज़रूर बन जाएगा।

व्यावहारिक पहलू से व्यक्ति और समाज पर नज़र डालें तो आज हर जगह व्याप्त संघर्ष और हिंसा की लपटें स्वयं इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि व्यक्ति और समाज सफलता और मुक्ति के वास्तविक मार्ग और लक्ष्य से भटक कर अन्धेरी राहों में बहुत दूर निकल चुका है और अनगिनत पेचीदा समस्याओं की दलदल में फँस चुका है। अब यहाँ यह प्रश्न उठता है कि क्या स्रष्टा को मनुष्य से इतनी शत्रुता और घृणा है कि वह स्वयं चाहता है कि मनुष्य दुनिया में भटकता रहे और लौकिक और पारलौकिक जीवन में कल्याण और मुक्ति से वंचित हो।

## धर्म समस्त मनुष्यों के लिए अनिवार्य है

दार्शनिकों, विचारकों और वैज्ञानिकों के विपरीत धर्म का विषय हमेशा मूर्त और भौतिक पदार्थों अर्थात् भौतिक संसार के साथ-साथ ईश्वर, मृत्यु के बाद के जीवन, परलोक में मनुष्य के छोटे-बड़े सारे कर्मों के हिसाब-किताब, हमेशा की सफलता के लिए जन्नत (स्वर्ग) और असफलता का ठिकाना जहन्नम (नरक) इत्यादि रहा है। यह कहना सही नहीं है कि उपर्युक्त सारे अमूर्त विषय नज़र नहीं आते। इसलिए हम उन्हें नहीं मान सकते। इन महत्त्वपूर्ण सच्चाइयों को मानने और स्वीकार करने या इनकार करने के परिणामस्वरूप मानव-जीवन की दो अलग-अलग कार्य-प्रणालियाँ, चरित्र और नमूने सामने आते हैं। इसलिए इससे स्पष्ट है कि इनकी परिणति भी एक समान नहीं हो सकती। धर्म पर

चलनेवाले लोगों का, विशेषकर मानवतापूर्ण ईश्वरीय धर्म इस्लाम पर चलनेवालों का एक प्रामाणिक और सुरक्षित ऐतिहासिक रिकॉर्ड पाया जाता है कि जिन लोगों और समाज ने इस विशुद्ध धर्म को अपनाया, अल्लाह और अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की मर्ज़ी के अनुसार जीवन व्यतीत किया, उनके द्वारा एक आदर्श और सफल व्यक्ति, परिवार और समाज अस्तित्व में आया और कल्याणकारी राज्य स्थापित हुआ। इस सन्दर्भ में इस्लाम का दृष्टिकोण संक्षिप्त रूप में यहाँ प्रस्तुत है—

मानव-इतिहास में ईशदूतों और नबियों की एक बहुत बड़ी संख्या और शृंखला गुज़री है। धरती पर सबसे पहले आदमी हज़रत आदम (अलैहि॰) थे, जो अल्लाह के पहले सन्देशवाहक और पैग़म्बर भी थे। उनके बाद दुनिया के विभिन्न हिस्सों और काल-खंडों में पैग़म्बर आते रहे। पैग़म्बर और नबियों का यह सिलसिला हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर समाप्त होता है। ईश्वर ने आज से 1450 साल पहले हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को मक्का (सऊदी अरब) में अन्तिम ईशदूत बनाकर भेजा। मानव-इतिहास में एक लाख चालीस हज़ार पैग़म्बरों और नबियों के आने का उल्लेख मिलता है। आज मुसलमानों, ईसाइयों और यहूदियों के नज़दीक पैग़म्बरों का ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में आना सर्वमान्य है। ईशदूतों का दृढ़ और अटल कथन यह होता है कि उनके पास ईश्वर की ओर से विशिष्ट ज्ञान वह्य (प्रकाशना) के द्वारा आता है; क्योंकि जिन परोक्ष मामलों में दार्शनिक, विचारक और वैज्ञानिक केवल अनुमान और अटकल के तीर-तुक्के चलाते रहे हैं, ईश्वर वह्य (प्रकाशना) द्वारा मानव-जाति का स्पष्ट मार्गदर्शन करता रहा है। जीवन के मूलभूत प्रश्न और विशेषकर मनुष्य की सफलता और मुक्ति के राजमार्ग और लक्ष्य की ओर मार्गदर्शन ईशदूतों ने की। इस राजमार्ग और अभीष्ट स्थान के प्रथम मार्गदर्शक और सफल यात्री वे स्वयं होते थे। पैग़म्बर और नबी

शेष मानव-जाति का आह्वान और मार्गदर्शन करते कि वह उनके द्वारा बताए गए रास्ते पर चलें। ईशदूतों ने अपने बारे में स्पष्ट रूप से बताया कि वह्य या प्रकाशना के आधार पर जो सच्चाइयाँ, सिद्धान्त और शिक्षाएँ वे प्रस्तुत कर रहे हैं, यह उनके व्यक्तिगत ज्ञान और शोध का परिणाम नहीं है; बल्कि यह सब ईश्वर की ओर से है।

पैग़म्बरों और नबियों ने जो मार्गदर्शन किया उनके सम्बन्ध में यह बात नोट करने की है कि उनके अन्दर परस्पर मतभेद और विरोधाभास नहीं पाए जाते हैं; बल्कि आश्चर्यजनक रूप से पूर्ण सहमति और समानता पाई जाती है। उन महापुरुषों की बातें मानने में हमें कोई कठिनाई पेश नहीं आ सकती। उनकी बातों का इनकार, चाहे वह किसी भी कारण हो, ईश्वर के इनकार, अवज्ञा और विद्रोह का मार्ग है। ऐसी कार्य-प्रणाली अपना कर कोई व्यक्ति और समाज कभी सफल और पूर्णकाम नहीं हो सकता। ऐसा व्यक्ति और समाज खुद अपने हाथों अपनी बरबादी का सामान करके मुक्ति से वंचित हो जाता है और लोक-परलोक दोनों में अपमान और असफलता उसकी क़िस्मत बन जाती है।

अन्तिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने, जिन्हें अल्लाह ने केवल अरब के लोगों के लिए ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानव-जाति के लिए भेजा था। स्पष्ट रूप से कहा गया है कि वह किसी नए धर्म के संस्थापक और नई धार्मिक शिक्षा के वाहक नहीं हैं; बल्कि ईश्वर के सारे पैग़म्बर संसार में जिस इस्लाम के प्रचार-प्रसार करने के लिए आए थे, उसी धर्म इस्लाम को अन्तिम बार पूर्ण, सुव्यवस्थित और संग्राहक रूप में सम्पूर्ण मानव-जाति के लिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) लेकर आए, जो कि सारे प्राचीन धर्मों का नवीनतम, शुद्धतम और सर्वांगपूर्ण अन्तिम संस्करण (final edition) है। इस्लाम सम्पूर्ण मानव-जाति के लिए सर्वरोग निवारक औषधि (pancea) है।

एक प्रश्न वह्य (revelation) के बारे में है कि वह्य (प्रकाशना) क्या है?' वह्य (प्रकाशना) वास्तव में ईश्वर की ओर से पैग़म्बरों तक ईश्वरीय सन्देश पहुँचाने का साधन है। पैग़म्बरों तक यह सन्देश हमेशा ईश्वर के एक विशिष्ट फ़रिश्ते हज़रत जिबरील (अलैहि०) लाते रहे। वह्य (प्रकाशना) सन्देश-सम्प्रेषण का दोषरहित, त्रुटिरहित, सुरक्षित और सर्वांगपूर्ण साधन है (God's own way of Communication)। हम पैग़म्बरों, विशेष कर अन्तिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०), की बातों को किस आधार पर स्वीकार करें? उनकी बातों को मानने के निम्नलिखित आधार हैं—

(1) सारे पैग़म्बर ईश्वर के सच्चे बन्दे और पवित्र चरित्रवाले थें। वे कभी झूठ नहीं बोलते थे। जब वे सामान्य जीवन में झूठ नहीं बोलते तो वे अल्लाह के नाम पर कोई झूठी बात कैसे बोल सकते थे? उनके समर्थक ही नहीं, बल्कि उनके कट्टर विरोधियों ने भी हमेशा यह स्वीकार किया है कि उनका पैग़म्बर झूठा आदमी नहीं है।

(2) सभी पैग़म्बरों की कथनी और करनी में कहीं विरोधाभास या टकराव नहीं होता था। वे दूसरों को जो कहते उसको पहले वे खुद करके दिखाते थे। वे अपने समय के सारे मनुष्यों के लिए आदर्श (ideal) नमूना हुआ करते थे।

(3) सारे पैग़म्बर बहुत ही ईमानदार और धरोहरों की रक्षा करनेवाले थे। उनके स्वयं के व्यक्तित्व से बढ़कर इस मामले में कोई दूसरा नहीं होता था। उनके कट्टर विरोधियों ने भी उनकी ईमानदारी और सत्यनिष्ठा पर कभी कोई उंगली नहीं उठाई है।

(4) पूरी मानव-जाति के लिए पैग़म्बरों का कठोर परिश्रम निस्स्वार्थपूर्ण होता था। वे इसका कोई बदला अपने लिए नहीं चाहते थे। मनुष्यों की भलाई, उनकी सफलता और मुक्ति के लिए अपने पवित्र जीवन-

को खपा देते थे। परन्तु इसका बदला या प्रतिदान सिवाय ख़ुदा के किसी और से नहीं चाहते थे।

इस विवरण का निष्कर्ष यह है कि जीवन की सफलता और मुक्ति की जो धारणा और उसकी प्राप्ति का जो रास्ता अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने बताया है, वही सर्वोत्तम और कल्याणकारी मार्ग है और वही स्वीकार करने योग्य मार्ग है। हर आदमी को अपनी सफलता और मुक्ति के लिए इस धारणा को पूरे विश्वास और निस्स्वार्थ भाव से अपनाना अनिवार्य है। इसके विपरीत, जो भी मार्ग और जीवन-प्रणाली है उस पर चलने से मृत्यु के बाद के जीवन में बहुत बड़े घाटे और नरक की आग का ख़तरा है।

अल्लाह के आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने मनुष्य की सफलता और मुक्ति की सार्वभौमिक और सारगर्भित अवधारणा प्रस्तुत की है और लोक-परलोक दोनों में सफलता और मुक्ति की प्राप्ति का जो तरीक़ा बताया है, उसका विस्तृत विवरण आगे प्रस्तुत किया जा रहा है।

## धर्मों में सफलता और मुक्ति की धारणा

इस सन्दर्भ में विभिन्न धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन (comparative study of religions) आवश्यक है। साथ ही कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर भी विचार करना आवश्यक है। क्या सारे धर्मों में सफलता और मुक्ति की धारणाओं और उनकी प्राप्ति के तरीक़े एक समान और सर्वमान्य हैं? यदि सभी महत्त्वपूर्ण धर्मों के बीच परस्पर मतभेद और टकराव पाए जाते हैं, हालाँकि उनके बीच कुछ सामान्य तथ्य भी हो सकते हैं, तो ऐसी स्थिति में किस धर्म की सफलता और मुक्ति की धारणा को स्वीकार किया जाए? यहाँ एक प्रश्न यह भी पैदा होता है कि धर्म सम्पूर्ण जगत् के स्रष्टा की ओर से आना चाहिए, जो सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सबका पैदा करनेवाला, पालनहार, मृत्यु देने वाला और महाप्रलय के दिन सारे मनुष्यों को जीवित करके उनके

अच्छे-बुरे समस्त कामों का हिसाब-लेनेवाला और उसी हिसाब-किताब के अनुसार अच्छा- बुरा बदला देनेवाला है; न कि इस संसार के मरणशील और अल्पज्ञ मनुष्य की ओर से, जैसा कि कुछ धर्मों को व्यक्ति विशेष से सम्बद्ध किया गया है।

ये प्रश्न ये भी पैदा होते हैं कि मानव-जाति की शुरुआत में धरती पर पहले मनुष्य हज़रत आदम (अलैहि॰) के क़दम जब पड़े थे, तो स्रष्टा ने उन्हें कोई धर्म दिया था या नहीं? अगर दिया था तो वह कौन-सा धर्म था? और क्या वह धर्म केवल आस्थाओं, नैतिक, आध्यात्मिक शिक्षाओं और मूल्यों पर आधारित था या व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन के लिए एक सर्वांगपूर्ण जीवन-व्यवस्था के रूप में प्रदान किया गया था? क्या स्रष्टा की ओर से विश्वास दिलाया गया था कि मनुष्य उसके द्वारा प्रदान किए धर्म पर चलेगा, तो वह इस दुनिया में भी सफलता और मुक्ति प्राप्त कर लेगा और मृत्यु के बाद के जीवन में अपने पैदा करनेवाले की ख़ुशी, प्रसन्नता और शाश्वत मुक्ति पाएगा। इस सम्बन्ध में कुछ बड़े धर्मों की आस्थापरक धारणाओं का सारांश अग्रलिखित है—

## हिन्दू धर्म

जीवन की सफलता और मुक्ति के सन्दर्भ में वेदों में पुनर्जन्म यानी बार-बार जन्म, मृत्यु और जन्म का उल्लेख नहीं मिलता। वेदों में एक ही बार यानी मृत्यु के बाद पुनर्जीवन, स्वर्ग और नरक का वर्णन मिलता है। कर्मों के आधार पर स्वर्ग और नरक का फ़ैसला कर दिया जाएगा; बल्कि वेदों में विभिन्न प्रकार के नरक के नाम भी मिलते हैं।

प्राचीन हिन्दू शिक्षाओं के अनुसार मानव-जीवन का अन्तिम ठिकाना शाश्वत सत्य में मिल जाना है। इसके लिए मृत्यु के बाद नया जन्म और नए जन्म के बाद फिर मृत्यु का एक लम्बा चक्कर चलता

रहेगा। जिस तरह जीवन के बाद मृत्यु निश्चित है, उसकी तरह मृत्यु के बाद दोबारा जीवन निश्चित है। यह आवागमन का दर्शन है। यह प्रक्रिया जारी रहती है, यहाँ तक कि आत्मा इस योग्य हो जाती है कि वह स्रष्टा की आत्मा में विलीन हो जाए। एक लेखक ने लिखा है—

> "जन्म और दोबारा जन्म लेने का यह सिलसिला उस समय तक जारी रहता है, जब तक आत्मा इस प्रक्रिया से पूरी तरह मुक्त नहीं हो जाती। यह मुक्ति 'मोक्ष' या 'नजात' कहलाती है। यह जहाँ कारणों से मुक्ति है और बार-बार जन्म लेने से मोक्ष है, वहीं इस मुक्ति का अर्थ महान ईश्वर में विलीन हो जाना भी है। हिन्दू धारणा में किसी आत्मा की यह सर्वोत्तम सफलता है।" (मुताला-ए-मज़ाहिब, पृष्ठ 40)

मुक्ति या मोक्ष को मूलतः जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति के अर्थ में प्रयोग किया जाता है। इसका अर्थ हिन्दुओं के विभिन्न दार्शनिक सम्प्रदायों की दृष्टि में अलग-अलग हैं। शैव-सम्प्रदाय और वैष्णव सम्प्रदाय के नज़दीक इसका मतलब अपनी पसन्द की देवी या देवता (Deity) से अत्यन्त निकटता प्राप्त करना है, जबकि ऐसा करनेवाला अपने निजी व्यक्तित्व को बनाए रखे।

"व्यावहारिक जीवन में भागवतगीता मुक्ति के बारे में दो तरह की शिक्षा देती है। मुक्ति या मोक्ष का एक रास्ता तो यह है कि आदमी अपने क़ारोबार, इस संसार और सांसारिक जीवन की व्यस्तताओं से अलग होकर ज्ञान और सत्य की खोज में लग जाए। दूसरा तरीक़ा यह है कि मनुष्य जीवन के क़र्तव्यों को पूरा करे और तुच्छ इच्छाओं की दासता को त्याग दे। हालाँकि श्रीमद्भगवद्गीता में दूसरे तरीक़े को सराहा गया है; लेकिन सांसारिक जीवन को त्यागने के दर्शन का खण्डन नहीं किया गया।" (इस्लाम और मज़ाहिबे-आलम, पृष्ठ 16)

हिन्दू धर्म का प्रचलन लगभग चार हज़ार साल से है। यदि सफलता और मुक्ति की गॉरंटी इससे जुड़ी हुई है, तो फिर हिन्दू धर्म से पहले मनुष्यों की सफलता और मुक्ति का धर्म कौन-सा था? स्पष्ट सफलता और मुक्ति की आवश्यकता मनुष्यों को हमेशा से रही है और भविष्य में भी रहेगी।

## बौद्ध मत

बौद्ध मत में ईश्वर के अस्तित्व को न स्वीकार किया गया है, न ही उसका इनकार। हाँ, झुकाव ईश्वर की आवश्यकता न होने की ओर है। बौद्ध मत के जीवन-दर्शन की दृष्टि से मुक्ति या निर्वाण के लिए इच्छाओं से छुटकारा पाना ही पर्याप्त है। गौतम बुद्ध की शिक्षा यह थी कि आदमी की मुक्ति में किसी ईश्वर, देवी-देवता या उसके अनुग्रह और कृपा की आवश्यकता नहीं है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तिगत प्रयासों और नैतिक नियमों की शिक्षा को अपनाकर मुक्ति पा सकता है। बुद्ध की दृष्टि में स्वर्ग और नरक कोई अलौकिक चीज़ नहीं है; बल्कि इसी संसार में आदमी अपने जीवन में स्वर्ग पा सकता है। परन्तु ध्यान देने योग्य बात यह है कि बुद्ध ने स्वर्ग और नरक की धारणा के बजाय निर्वाण की धारणा प्रस्तुत की है। उन्होंने आत्मा के अस्तित्व का भी इनकार किया है। उनके अनुसार, आत्मा को शाश्वत अस्तित्व स्वीकार करने से मनुष्य के अन्दर नैतिकता जैसे गुण पैदा करने में रुकावट और अड़चन पैदा होती है। निर्वाण किस दशा का नाम है, इसपर बौद्ध मत के विद्वान एकमत नहीं हैं। एक भाव यह है कि निर्वाण अत्यन्त आनन्द की दशा को प्राप्त करना है, जो कामनाओं और इच्छाओं का त्याग करने से प्राप्त होती है। इससे मनुष्य पुनर्जन्म और मृत्यु-चक्र से छुटकारा पा जाता है। निर्वाण की एक दूसरी व्याख्या इस तरह की गई है कि इसमें मनुष्य की मनेच्छा बिलकुल नष्ट हो जाए।

## जैन मत

शरीर को जैन मत में तत्त्व या भौतिक पदार्थ माना गया है। मनुष्य की आत्मा इस तत्त्व में क़ैद है। आत्मा के छुटकारे के लिए आवश्यक है कि भौतिक पदार्थ यानी शरीर को कष्ट और पीड़ा दी जाए। कठोर तपस्या की जाए। इसलिए श्रेष्ठ और सराहनीय मृत्यु वह हो सकती है कि जिसमें आदमी उम्र के अन्तिम हिस्से में भूखा रहकर मर जाए।

मुक्ति को संक्षेप में इस तरह बयान किया जा सकता है—

> "जैन मत में चूँकि शुरुआती बौद्ध मत की मुक्ति का दारोमदार किसी परोक्ष शक्ति के निर्णय या देवताओं की नरमी के विरुद्ध मनुष्य के पूरे तन और मन से किए गए व्यक्तिगत प्रयास और परिश्रम पर निर्भर है। इसलिए आत्मा को तत्त्व अर्थात् भौतिक पदार्थ के चंगुल से मुक्त कराने के लिए इस धर्म में एक बहुत व्यापक कार्य-प्रणाली अपनाई गई है।
>
> इस सिलसिले में तरह-तरह के क़ानून, सिद्धान्तों और नियमों की बहुत-सी सूचियाँ हैं, जो जैन मत के अनुसार मुक्ति के अभिलाषियों के लिए अनिवार्य हैं।
>
> जो लोग जैन मत की नैतिक शिक्षाओं को आदर्श रूप में अपनाना चाहते हों, उनको पूर्ण रूपेण संन्यास लेना होगा। ये लोग 'साधु' और 'साध्वी' कहलाते हैं।"
>
> (दुनिया के बड़े मज़ाहिब, पृष्ठ 132)

बौद्ध मत और जैन मत लगभग दो हज़ार छह सौ साल से हैं। सफलता और मुक्ति की गॉरंटी इनसे जुड़ी हुई हैं। अगर ऐसा है, तो फिर इन मतों से पहले के मनुष्यों की सफलता और मुक्ति का धर्म

कौन-सा था? स्पष्ट है कि इनसे पहले भी मानव-जाति को सफलता और मुक्ति की ज़रूरत थी; बल्कि हमेशा से रही है और हमेशा रहेगी।

## ईसाई मत

एक लेखक ने ईसाई मत के सन्दर्भ में मुक्ति के सम्बन्ध में लिखा है—

> "हज़रत ईसा मसीह (अलैहि०) ने अपनी मृत्यु से मानवता के अनादिकालिक पाप का प्रायश्चित करके उसकी आत्मिक मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। मसीह मानवता के मुक्तिदाता थे और उनपर–ईमान लाने के बाद ही मनुष्य पापों की गन्दगियों से पवित्र होकर आकाशीय साम्राज्य (मुक्ति और सफलता) की परिधि में प्रवेश कर जाता है।"
>
> (इस्लाम और मज़ाहिबे-आलम, पृष्ठ 131)

एक विचारक ने भी उल्लेख किया है—

> "मसीही नैतिकता के चरम उत्कर्ष पर पहुँचने के लिए कारणों का त्याग, सम्बन्ध-विच्छेद, लड़खड़ाहट और मृत्यु, आत्म-निग्रह और स्वनिषेध आवश्यक है। इसका अर्थ यह है कि मुक्ति या आकाशीय साम्राज्य पर संन्यासियों और राहिबों का एकाधिकार स्वीकार करना पड़ेगा। इस छोटी-सी परिधि के अन्तर्गत मानव-जगत् के बारह महाअन्धकार को जगह मिल नहीं सकती। जो लोग सांस्कृतिक व्यवस्था का संचालन करते हैं, शासन और राजनीति की तदबीरें करते हैं और मनुष्य की तरह-तरह की ज़रूरतों की पूर्ति करने के लिए विभिन्न प्रकार के कारोबार में लगे हुए हैं, उनके लिए इस साम्राज्य के दरवाज़े बन्द हैं; क्योंकि ईसाई मत का मूल सिद्धान्त यह है कि आदमी एक ही समय में दुनिया और दीन (संसार और धर्म) दोनों में पाँव नहीं रख सकता। आकाशीय साम्राज्य का दरवाज़ा

उसी समय खुल सकता है, जबकि वे संसार का त्याग करके मसीह का बताया हुआ धार्मिक जीवन अपना ले।”

(यहूदियत व नसरानियत, पृष्ठ 355)

मसीह उन सारे लोगों के लिए मुक्तिदाता हैं, जो उन पर ईमान रखते हों।

दो हज़ार साल से कुछ अधिक बरसों से ईसाई मत दुनिया में मौजूद है। अगर मनुष्यों को सफलता और मुक्ति इसी को अपनाने से मिलना सम्भव था, तो फिर मनुष्यों की जो आबादी ईसाई मत से पहले मौजूद थी, तो उनकी सफलता और मुक्ति के लिए कौन-सा धर्म था?

एक महत्त्वपूर्ण बात उपर्युक्त धर्मों के बारे में समान है। वह यह कि इन सारे धर्मों में संन्यास को आदर्श माना गया है और संसार में पाई जानेवाली ईश्वरीय अनुग्रहों और कृपादानों, नाते-रिश्तों और सम्बन्धों को पूर्णतः त्याग देना सफलता और मुक्ति के लिए अनिवार्य और अपरिहार्य समझा गया है। स्पष्ट है इसके परिणामस्वरूप सामाजिक, नागरिक और सांस्कृतिक जीवन की स्थापना नहीं हो सकती। ऐसी स्थिति में सफलता और मुक्ति का प्रश्न ही पैदा नहीं हो सकता।

## यहूदी मत

यहूदियों ने अपने आपको ईश्वर की चहेती क़ौम और जाति कहा है। उनका कहना है कि वे ईश्वर के चहेते और उसके बेटे हैं। वे नरक की आग में नहीं जाएँगे और अगर नरक में जाएँगे भी तो बहुत कम समय के लिए। वह ईश्वर की चुनी हुई जाति है और संसार में सर्वोच्च और सर्वश्रेष्ठ हैं। वे समझते हैं कि अल्लाह से उनका कोई विशेष सम्बन्ध है। इसलिए यहूदी जाति हर हाल में सफल है और परलोक में उनकी सफलता और मुक्ति सुनिश्चित है।

लगभग सवा तीन हज़ार साल से यहूदी मत दुनिया में प्रचलित है।

अगर आदमियों की सफलता और मुक्ति इसी को अपनानें से सम्भव होती, तो फिर आदमियों की आबादी तो यहूदी मत से पहले भी थी; तो उन मनुष्यों की सफलता और मुक्ति के लिए कौन-सा धर्म था?

## इस्लाम

सफलता और मुक्ति की अत्यन्त स्पष्ट और बुद्धि को अपील करने वाली धारणा इस्लाम में पाई जाती है। यह मौलिक धारणा और विचार हमें क़ुरआन और ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के कथनों (हदीस) में मिलते हैं। इस्लाम में सफलता और मुक्ति की धारणा को समझने के लिए क़ुरआन में मानव-जाति, मानव-जीवन और सम्पूर्ण जगत् के सम्बन्ध में वर्णित धारणा को समझना आवश्यक है।

## मानव-जीवन और सम्पूर्ण जगत् के सम्बन्ध में क़ुरआन की धारणा

(1) मनुष्य इस संसार में अल्लाह का बन्दा और उसका प्रतिनिधि है यानी मनुष्य को कुछ अधिकार और सीमित स्वतंत्रता प्राप्त है। इसी कारण मनुष्य ईश्वर के सामने उत्तरदायी और जवाबदेह है। इसमें शक नहीं कि मनुष्य भौतिक और नैतिक अस्तित्व रखता है, लेकिन वह किसी चीज़ का मालिक नहीं है। सम्पर्ण जगत् की सारी चीज़ों का स्वामी और मालिक सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह है। अल्लाह ने मानव-जाति को अपना प्रतिनिधि और ख़लीफ़ा नियुक्त करके उसे जगत् की चीज़ों पर उपभोग का अधिकार प्रदान किया है। जगत् के सारे साधन-संसाधन मानव-जाति के पास अल्लाह की धरोहर है। इसलिए हर मनुष्य के लिए यह अनिवार्य है कि वह दुनिया की हर चीज़ का उपयोग और उपभोग अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ करे; क्योंकि हर इनसान को परलोक में हर उस चीज़ के बारे में हिसाब-किताब देना होगा, जिसका उपयोग और उपभोग उसने किया होगा।

(2) मनुष्य को सांसारिक जीवन सामयिक और अस्थायी रूप से परीक्षा और आज़ामइश के रूप में और पारलौकिक जीवन की सफलता और मुक्ति की तैयारी के लिए प्रदान किया गया है। यह जीवन बोझ और पाप नहीं है। अल्लाह ने इस संसार में मानव-जाति पर विभिन्न रूप में अनन्त अनुग्रह और मेहरबानियाँ की हैं। रिश्ते-नाते और पारस्परिक सम्बन्ध भी मानव-जाति पर ईश्वर का विशेष अनुग्रह और उपहार है। संसार की इन सारी चीज़ों में डूबकर अल्लाह को भुला देना, उसकी इबादत से मुँह मोड़ लेना या लापरवाही बतरना जितना बड़ा गुनाह, असफलता और घाटे का सौदा है, उतना ही बड़ा घाटे और असफलता का सौदा पत्नी, सन्तान, घर और परिवार और अल्लाह की नेमतों को ठुकराकर संन्यास का जीवन अपना लेना है। इस्लाम की दृष्टि में सफलता और मुक्ति का मार्ग माँ-बाप, पत्नी, सन्तान, घर और परिवार के मध्य से गुज़रता है। ये सब ख़ुदा की मर्ज़ी और उसके पैग़म्बर के बताए हुए तरीक़े के अनुरूप ढल जाएँ तो यह शाश्वत सफलता, मुक्ति और लाभ का सौदा है।

(3) दुनिया के इस क्षणिक जीवन के बाद एक शाश्वत और हमेशा रहनेवाली ज़िन्दगी आनेवाली है। परलोक की यह ज़िन्दगी दुनिया की समाप्ति और क़ियामत (प्रलय) के क़ायम होते ही शुरू होगी।

(4) इस सम्पूर्ण जगत् को अल्लाह ने मनुष्य के वशीभूत कर रखा है। अखिल विश्व और इसके अन्दर पाए जानेवाले समस्त सृष्ट जीवों और पदार्थों का स्रष्टा अनेक नहीं, एकमात्र अल्लाह है। उसी ने इन सबको पैदा किया है। सम्पूर्ण जगत् की अनगिनत चीज़ों को उसी स्रष्टा ने मानव-जाति की सेवा में लगा रखा है। मनुष्य को इस जगत् में पैदा करने का उद्देश्य है, एक और केवल एक ईश्वर की इबादत, उपासना और उसका आज्ञापालन।

इस्लाम में सफलता और मुक्ति की धारणा यह है कि मनुष्य ख़ुदा पर सारे पैग़म्बरों और अन्तिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर और परलोक के दिन पर ईमान लाए यानी इन सबको दिल से स्वीकार करे और ईश्वर और उसके पैग़म्बर के आदेशों के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारे। दुनिया के पवित्र अनुग्रहों और नेमतों से अल्लाह की हिदायतें और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के बताए हुए तरीक़े से लाभ उठाए। अपने शरीर को कष्ट पहुँचाना, इन अनुग्रहों से वंचित करना, अपनी ज़ान को मौत के मुँह में डालना और आत्महत्या करना बहुत बड़ा गुनाह है।

सफलता और मुक्ति की धारणा में यह बात भी शामिल है कि मनुष्य ख़ुदा की शिक्षा और हिदायत की रौशनी में ख़ुदा के बन्दों के हक़ पूरी ईमानदारी से अदा करे। तात्पर्य यह कि मनुष्य अपनी पूरी ज़िन्दगी अल्लाह की बन्दगी और आज्ञापालन में गुज़ारे। इस धारणा में यह बात भी शामिल है कि मौत के बाद आनेवाली हमेशा की ज़िन्दगी में आदमी अल्लाह की अप्रसन्नता और नरक की आग से बच जाए और परलोक की ज़िन्दगी में ईमान और भले कामों के कारण ख़ुदा की प्रसन्नता प्राप्त कर ले और स्वर्ग का पात्र ठहरे। सफलता और मुक्ति की ये शर्तें हैं। क़ुरआन में कहा गया है—

> "और जो कोई ईमान लाने से इनकार करे, उसका कर्म बरबाद हो गया और वह परलोक में घाटा उठानेवालों में से है।" (क़ुरआन, 5:5)

ख़ुदा का इनकार या ख़ुदा को मानकर किसी को ख़ुदा का साझी ठहराना और उसके अन्तिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का इनकार या आप (सल्ल०) को अल्लाह का पैग़म्बर मानने के बावजूद आपकी पैरवी से मुँह मोड़ लेना असफलता है।

परलोक के जीवन के बारे में क़ुरआन कहता है—

> "परलोक के बारे में अल्लाह का वादा निश्चय ही सच्चा

है। अतः दुनिया की ज़िन्दगी तुमको धोखे में न डाले और न धोखेबाज़ तुमको ख़ुदा से लापरवाह कर दे।" (क़ुरआन, 31:33)

एक दूसरी जगह पर कहा गया है—

"फिर जिस किसी ने कण भर नेकी की होगी, वह उसको देख लेगा और जिसने कण भर बुराई की होगी वह उसको देख लेगा।" (क़ुरआन, 99:7,8)

एक विचारक ने लिखा है—

"पहले कहा गया था कि दुनिया तुम्हारे लिए है और इसी लिए बनाई गई है कि तुम इसको ख़ूब अच्छी तरह बरतो। अब मामले का दूसरा रुख़ पेश किया जाता है और यह बताया जाता है कि तुम दुनिया के लिए नहीं हो, न इसलिए बनाए गए हो कि यह दुनिया तुम्हें बरते और तुम इसी में अपने आपको गुम कर दो। दुनिया की ज़िन्दगी से धोखा खाकर कभी यह न समझ बैठना कि हमें हमेशा-हमेशा यहीं रहना है। ख़ूब याद रखो कि यह माल, यह दौलत, यह शान और शौकत के सामान सब अस्थायी और क्षणिक हैं। सब कुछ देर का बहलावा हैं, सब का अंजाम मौत है और तुम्हारी तरह ये सब मिट्टी में मिल जानेवाले हैं। इस अस्थायी दुनिया में से अगर कोई चीज़ शेष रहनेवाली है तो वह सिर्फ़ ईमान और नेकी है। दिल और आत्मा की नेकी, आचरण और कर्म की नेकी।"

(इस्लामी तहज़ीब और उसके उसूल और मबादी, पृष्ठ 44)

## क़ुरआन का स्पष्टीकरण

पवित्र क़ुरआन में विधर्मी और असफल मनुष्य की दयनीय दशा का वर्णन इन शब्दों में किया गया है—

"काश! तुम देखो वह समय जब ये अपराधी सिर झुकाए

अपने रब के सामने खड़े होंगे (उस समय ये कह रहे होंगे) : ऐ हमारे रब! हमने ख़ूब देख लिया और सुन लिया, अब हमें वापस भेज दे; ताकि हम अच्छा कर्म करें। हमें अब विश्वास आ गया है.......मगर जवाब में कहा जाएगा : अतः चखो मज़ा अपनी इस करतूत का कि तुमने इस दिन के मिलने को भुला दिया। हमने भी अब तुम्हें भुला दिया है। चखो हमेशा के अज़ाब का मज़ा अपनी करतूतों के बदले में, जो तुम करते थे।" (क़ुरआन, 32:12, 14)

"ऐ नबी! उनसे कहो : क्या हम तुम्हें बताएँ कि अपने कर्मों में सबसे अधिक असफल और अप्राप्त लोग कौन हैं?—वे कि सांसारिक जीवन में जिनकी सारी कोशिश सीधे मार्ग से भटकी रही और वे समझते रहे कि वे सब कुछ ठीक कर रहे हैं। ये वे लोग हैं, जिन्होंने अपने रब (पालनहार-प्रभु) की आयतों को मानने से इनकार किया और उसके सामने पेशी का यक़ीन न किया। इसलिए उनके सारे कर्म अकारथ हो गए। क़ियामत के दिन हम उन्हें कोई वज़न न देंगे। उनका बदला नरक है, उस इनकार के बदले में जो उन्होंने किया और उस मज़ाक़ के बदले में जो मेरी आयतों और मेरे रसूलों के साथ करते रहे। हाँ, वे लोग जो ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे कर्म किए उनके आतिथ्य (मेहमाननवाज़ी) के लिए फ़िरदौस के बाग़ होंगे, जिनमें वे हमेशा रहेंगे और कभी उस जगह से निकलकर कहीं जाने को उनका जी न चाहेगा।" (क़ुरआन, 18:103-108)

इस्लाम में मुक्ति का सम्बन्ध सांसारिक जीवन से भी है। पारलौकिक जीवन में सफलता और मुक्ति के बारे में विस्तृत चर्चा ऊपर आ चुकी है।

मौजूदा संसार में मुक्ति का तात्पर्य यह है—

ग़लत विचारों, ग़लत आस्थाओं और ग़लत कर्मों से छुटकारा;
ग़लत रस्म-रिवाजों और ग़लत तौर-तरीक़ों से छुटकारा;
अन्धविश्वास, शगुन, भविष्यवाणी और बुरे कर्मों से छुटकारा;
मन की इच्छा के पीछे अन्धाधुन्ध चलने और मन की बुरी इच्छाओं से छुटकारा।

इस्लाम में सफलता और मुक्ति की धारणा अत्यन्त व्यापक और सर्वांगपूर्ण है। मानव-जीवन की सफलता और मुक्ति के सम्बन्ध में क़ुरआन का यह मार्गदर्शन दिल को सन्तुष्ट और बुद्धि को अपील करता है। इसमें कोई बात बुद्धि और प्रकृति के विरुद्ध नहीं है; क्योंकि इस्लाम एक नैसर्गिक धर्म है। सफलता और मुक्ति की इस धारणा के साथ ईश्वर की इबादत और उपासना का पूरा तरीक़ा इस्लाम में बताया गया है। इस्लाम समस्त मानव-जाति के लिए एक सम्पूर्ण जीवन-व्यवस्था है। यह सुख-शान्ति, सन्तोष, सुरक्षा और भौतिक एवं आध्यात्मिक आनन्द प्रदान करता है।

एक महत्त्वपूर्ण पहलू यह भी है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने मानव-इतिहास में इस्लाम के आधार पर आदर्श व्यक्ति, परिवार और समाज का निर्माण किया और एक मानवतापूर्ण सर्वोत्तम जीवन-व्यवस्था की स्थापना की। इसका प्रामाणिक और सुरक्षित रिकॉर्ड हमें इतिहास के पन्नों में मिलता है। इस्लाम चूँकि पहले मनुष्य हज़रत आदम (अलैहि॰) के साथ ही शुरू हुआ, इसीलिए पहले दिन से ही मनुष्यों की सफलता और मुक्ति के सम्बन्ध में मानव-जाति के मार्गदर्शन के लिए अल्लाह की ओर से इस्लाम धर्म की स्थापना की गई। आज का मानव इन बातों पर सोच-विचार करके अपने लिए बेहतर फ़ैसला करने की आज़ादी और अधिकार रखता है। अपनी आज़ादी और अधिकार का प्रयोग वह अच्छे या बुरे अथवा दोनों मार्गों को अपनाने में कर सकता है। इस

संसार में जो आदमी जैसी फ़सल बोएगा, वह क़ियामत के दिन परलोक में वैसी ही फ़सल काटेगा; वहाँ जिस व्यक्ति के अच्छे कर्मों का पलड़ा भारी होगा, वह सदाबहार बाग़—जन्नत में जाएगा और वहाँ उसके लिए शाश्वत आनन्द ही आनन्द होगा। इसके विपरीत जिसके बुरे कर्मों का पलड़ा भारी होगा, वह दुखदायिनी नरकाग्नि में प्रवेश करेगा और वह वहाँ तड़प-तड़प, चींख़-चिल्लाकर मौत को पुकारेगा, लेकिन मौत कभी भी उसके पास न फटकेगी। नरक में उसके पास तड़पने, कराहने, चींख़ने-चिल्लाने, अफ़सोस करने और पछताने के सिवा कोई चारा न होगा।

इस लोक में अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल॰) की मर्ज़ी और शिक्षाओं के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारनेवाले सत्यनिष्ठ, ईमानदार और सत्कर्मी लोगों को ही सफलता, मुक्ति और अन्ततोगत्वा शाश्वत आनन्द की प्राप्ति होगी। इसके विपरीत जो अल्लाह और उसके रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की शिक्षाओं का इनकार करेगा और उनके विपरीत जीवन-निर्वाह करेगा, वह निश्चय ही नरक का अधिकारी होगा, नरक की दुखदायिनी यातना में ग्रस्त होगा।

○ ○ ○

"मेरी जन्नत मेरे सीने में है। मैं जहाँ भी रहूँगा, मेरी जन्नत मेरे साथ होगी।"

(इमाम इब्ने-तैमिया)

# ईशवाणी

"और तुम्हारे रूप में एक ऐसे समुदाय का आविर्भाव होना चाहिए, जो भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोके और ऐसे ही लोग सफलता प्राप्त करनेवाले हैं।" (क़ुरआन, 3:104)

✧✧

"उस दिन कितने ही चेहरे उज्ज्वल होंगे और कितने ही चेहरे काले पड़ जाएँगे।" (क़ुरआन, 3:106)

✧✧

"नेक लोग आनन्द में होंगे और दुराचारी भड़कती आग में।" (क़ुरआन, 82:13,14)

✧✧

"जिस की (सत्कर्म की) तौलें भारी रहीं, उसे तो एक मनभाता जीवन प्राप्त होगा; और रहा वह जिसकी तौलें हल्की रहीं, तो उसकी माँ (ठिकाना) हाविया (नरक) होगी।" (क़ुरआन, 101:6-9)

✧✧

"हमने उन लोगों को बचा लिया जो बुराई से रोकते थे और ज़ुल्म करनेवालों को हमने उनकी अवज्ञा के कारण कठोर यातना में पकड़ लिया।" (क़ुरआन, 7-165)

✧✧

"ऐ ईमानवालो! तुम सब अल्लाह से तौबा करो; ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।" (क़ुरआन, 24:31)

✧✧

# ईशदूत की अमर वाणी

हज़रत अबू-ज़ैद उसामा-बिन-ज़ैद-बिन-हारिसा (रज़ि॰) कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को यह कहते हुए सुना, "क़ियामत (प्रलय) के दिन एक व्यक्ति को लाया जाएगा और फिर उसे नरक में डाल दिया जाएगा। उसकी आँतें उसके पेट से बाहर निकल पड़ेंगी और वह उसको लिए हुए इस तरह चक्कर लगाएगा, जिस तरह गधा चक्की के गिर्द घूमता है। नरक के लोग उसके पास इकट्ठा हो जाएँगे और कहेंगे : ऐ फ़लाँ! यह तुझे क्या हो गया है? क्या तू नेकी का हुक्म नहीं देता था और बुराई से नहीं रोकता था? वह कहेगा : क्यों नहीं, नेकी का हुक्म तो देता था; किन्तु स्वयं नेकी नहीं करता था और मैं बुराई से रोकता था; किन्तु स्वयं बुराई करता था।" (हदीस : बुख़ारी, मुस्लिम)

✧✧

"हज़रत आइशा (रज़ि॰) कहती हैं कि मेरे पास एक औरत आई। उसके साथ उसकी दो बच्चियाँ भी थीं। वह माँग रही थी। मेरे पास एक खजूर के अलावा कुछ और न था। मैंने वही उसको दे दिया। उसने उसे अपनी दोनों बच्चियों में उसे बाँट दिया और स्वयं उसमें से कुछ न खाया। फिर खड़ी हुई और बाहर चली गई। नबी (सल्ल॰) हमारे पास आए तो मैंने आप (सल्ल॰) को यह बात बताई। आप (सल्ल॰) ने कहा : जिस व्यक्ति को इन बच्चियों के द्वारा आज़माया जाए और वह इनके साथ अच्छा व्यवहार करे, तो ये लड़कियाँ उसके लिए नरक से बचाव की आड़ बन जाएँगी।" (हदीस : बुख़ारी, मुस्लिम)

✧✧

"हज़रत अब्दुल्लाह-बिन-मसऊद (रज़ि॰) कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) चटाई पर सोये। फिर जब उठे तो आप (सल्ल॰) के पहलू पर निशान पड़ गए। हमने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), अच्छा

होता कि हम आपके लिए कोई बिस्तर बनवा देते। आप (सल्ल॰) ने कहा : मुझे दुनिया से क्या मतलब? मैं तो दुनिया में बस उस सवार की तरह हूँ, जो किसी वृक्ष के नीचे साया ले और फिर चल दे और उस वृक्ष को छोड़ जाये। (हदीस : तिर्मिज़ी)

✧✧

"जो व्यक्ति अपने दोनों जबड़ों और अपनी दोनों टाँगों के बीच की चीज़ों की ज़मानत दे, तो मैं उसके लिए जन्नत की ज़मानत देता हूँ।"

(हदीस : बुख़ारी)

✧✧

"नाते-रिश्ते को तोड़नेवाला स्वर्ग में प्रविष्ट न होगा।"

(हदीस : अबू-दाऊद)

✧✧

"जिस व्यक्ति से कोई ऐसी बात पूछी गई जिसका उसे ज्ञान है, फिर उसने उसे छिपाया, दिया क़ियामत के दिन उसको आग की लगाम पहनाई जाएगी।" (हदीस : तिर्मिज़ी, इब्ने-माजा, अबू-दाऊद)

✧✧

## पुस्तकें (सत्य-धर्म-परिचय सीरीज़)

- ☆ एकेश्वरवाद की मौलिक अवधारणा
- ☆ विशुद्ध एकेश्वरवाद
- ☆ ईशदूतत्व की धारणा : विभिन्न धर्मों में
- ☆ इस्लाम की सार्वभौमिक शिक्षाएँ
- ☆ इस्लाम : भ्रान्तियों और आक्षेपों का निवारण
- ☆ स्त्री-पुरुष में समानताएँ : इस्लाम की दृष्टि में
- ☆ कन्या भ्रूण-हत्या : समस्या और निवारण
- ☆ मानव-जीवन और परलोक
- ☆ मौत के बाद क्या?
- ☆ सर्वधर्म सम्भाव और इस्लाम धर्म
- ☆ Jesus and Mary (Peace Be Upon Them) in The Holy Qur'ān

## फ़ोल्डर्स (सत्य-मार्ग की खोज सीरीज़)

1. ईश्वर और उसका मार्गदर्शन
2. इस्लाम की वास्तविकता
3. मुंशी प्रेमचन्द के विचार : इस्लाम के बारे में
4. कुफ़्र, काफ़िर और शिर्क की वास्तविकता
5. तलाक़ : नारी का अपमान नहीं
6. परदा
7. क़ुरआन : ईश्वर का पैग़ाम आपके नाम
8. विरासत का क़ानून
9. एकेश्वरवाद की इस्लामी धारणा
10. रमज़ान : एक प्रशिक्षण-शिविर
11. रोज़ा : क्या और क्यों?
12. भ्रष्टाचार : उन्मूलन कैसे?
13. अज़ान और नमाज़
14. A Brief Introduction to The Holy Qur'an